प्रमुख राजस्थानी लोक नाट्य–एक परिचय

*डॉ. वन्दना कल्ला

राजस्थान में धार्मिक लोक गाथाओं को गाने का चलन है इसमें महाभारत के विभिन्न बयान को राजस्थान के गायक राजस्थानी भाषा में गाते हैं जैसे वह स्थानीय भाषा में डिंगल, भारत पाण्डुन के बड़े, खेल शायवन इत्यादि नामों से सम्बोधित करते हैं। ज्वाल (लोक महाभारत) मुख्य रूप से कामड जाति के गायकों के द्वारा गाई जाती है जबकि पाण्हुन के कडे (रचना) मेंव गोगियों के द्वारा गाये जाते हैं। इन गाथाओं में अम्बारस करणावलि, भीमो भारत, द्वौपद पुराण शावकरण, घोड़ों, पाण्डुरो जिग अवक्ता को माचरो हेमावतों इत्यादि कथाएं प्रमुख हैं।

आधुनिक समय में प्रचलित नाटक की लोक नाट्यों में निहित है। राजस्थान में कठपुतली नाटक बहुत प्राचीन शैली के है इसमें कथानक के साथ साथ वादक होता है व एक या दो व्यक्ति हाथ में डोर बांधकर कठपुतलियों को नृत्य कराता है। इस कला को विदेशों तक पहुंचाने व स्थापित करने में स्वर्गीय देवीलाल सामरजी का विशेष सहयोग रहा है।

इसी शैली के बाद ख्याल शैली सर्वाधिक लोकप्रिय है। ख्याल में भी कुचामणी व चिड़ावा शैली सीकर, चूरू, झुन्झुनू आदि क्षेत्र में अधिक लोकप्रिय है। ख्यालों का कथानक मुख्य रूप से धार्मिक व ऐतिहासिक रचनाओं से सम्बन्धित होता है। इनमें स्त्री पात्रों का अभिनव भी पुरूष पात्रों द्वारा किया जाता है। वाद्यों के रूप में नगाड़ा, ढोलक, सारंगी एवम् हारमोनियम का प्रयोग किया जाता है। इन ख्यालों में गोपीचन्द चन्द्र मलियागनी, अमरसिंह राठौड़, हरीशचन्द्र तारामती, गौड़ चौहान प्रसिद्ध हैं।

राजस्थान में रम्मत नामक लोक नाट्य का भी प्रचलन रहा है। रम्मत के दो प्रकार रावतों की रम्मत तथा जैसलमेंर व बीकानेर क्षेत्र में पुष्करणा ब्राह्मणों की रम्मत प्रसिद्ध है।

इसी में रावतों की रम्मत चारण जाति के याचक रावलों द्वारा की जाती है। अपनी रम्मत में रावल विभिन्न प्रकार के स्वांग लाते हैं। इन स्वांगों में 'बोहरा–बोहरी' सूरदास, कानगूर्जरी, जोगी जोगण, बाजणी घोड़ी इत्यादि प्रमुख है। रावल अपनी रम्मत में संगत के लिये जिन वाद्यों का उपयोग करते हैं उसमें रैवाज़ नामक तार वाद्य है जो की अब राजस्थान के लुप्त होने वाले वाद्यों में से एक है व ताल के लिये मादल का प्रयोग किया जाता है।

जैसलमेंर व फलौदी क्षेत्र के पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा की जाने वाली रम्मत में हेड़व मेंरी, अमरसिंह आदि की रम्मत विशेष उल्लेखनीय है।'' इस रम्मत में भी महिला पात्र का अभिनय पुरूषों द्वारा किया जाता है संगत में नगाड़ा, ढोलक व मंजीरों का प्रयोग होता है।

राजस्थान के उदयपुर, पाली एवं सिरोही जिलों के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में भीलों द्वारा गवरी लोक नाट्य में भील जाति के पुरूष कलाकार विभिन्न प्रकार के स्वांग लाते हैं, इस लोक नाट्य की यह विशेषता भी है कि यह दिन में भी किया जा सकता है। इस नाट्य में मादल थाली एवम् मंजीरा आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त समस्त भारत वर्ष में खेले जाने वाली रामलीला व रासलीला लोकनाट्य भी खेले जाते हैं। किन्तु इन नाट्यों का प्रचलन भरतपुर, सवाई माध ोपुर, अलवर व कोटा आदि क्षेत्रों में इसका अधिक प्रचलन है।

इन लोक नाट्यों में प्रायः वही लोक कथाएं होती हैं जिनका यहां के जनजीवन में बहुत प्रचलन होता है। प्रायः ऐतिहासिक कथावस्तु में धार्मिक मान्यताओं का अनायास ही समावेश हो जाता है। संगीत एवम् नाटक का चोली दामन का साथ है। ये संगीत गांव में प्रायः मादल, ढोलक, नगाड़ा, सारंगी रावण हत्था, इनकी सहायता से किया जाता है। इन लोक नाट्यों में नाटकीय त्तवों पर प्रायः ध्यान नहीं दिया जाता जो कुछ नाटकीयता इनमें पाई जाती है। वह स्वाभाविक एवम् अनायास ही आई हुई होती है। लोक–नाट्यों में राजस्थान के विभिन्न भागों में विभिन्न बोलियों में प्रचलित है। लोक भाषा ही लोक नाट्यों का प्राण है। साहित्यिक नाटकों की भांति इन नाटकों में भी विदूता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। आधुनिक सिनेमा, दूरदर्शन व अन्य पाश्चात्य मनोरंजन के साधनों ने इन लोक नाट्यों को बहुत हानि पहुंचाई है। आजकल इनका खेला जाना निरन्तर कम होता जा रहा है। संगठित रूप से नाट्यों के विकास की आवश्यकता है क्योंकि इनमें राजस्थान की आत्मा निवास करती है।

*संगीत विभाग, महारानी कॉलेज, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर